JAMNALAL BAJAJ FOUNDATION

Mr. Bhawani Shanker Kusum
Recipient
Constructive Work Award 2019

This is the finest opportunity of my life that I have been selected for the award instituted on the name of such a great person, who not just put all his wealth and business at stake but also devoted himself and his whole family for the freedom struggle of the nation led by Gandhiji. This is perhaps the world's greatest and most amazing example of sacrifice offered by the leadership of the line for any country's independence. I salute late Shri Jamanalalji Bajaj and Janakideviji.

I am thrilled by the memoir of the incident mentioned in Janaki Deviji's 'The Journey of My Life' when in 1956, the then Government of India decided to honour her with Padma Vibhushan. When her elder son - Shri Kamalnayan told that a letter to this effect was sent by the then President Dr. Rajendra Prasad, Janakideviji expressed her confusion and said – "Rajendra Babu is very dear to us. I am afraid that avoiding his decision might look like my arrogance, but I am hesitant to accept this as I wonder if I truly deserve this". This mental dilemma of that great woman who gave up her entire family and every moment of her life to the country is truly amazing.

Today, I am in the same situation and I am wondering if I am even eligible to receive the award in the name of such great son of the country, Sri Jamnalalji Bajaj. I pay my most respectful regards to his sacrifice, dignified personality and continuous working life.

Gandhiji gave me the power to think, inspire action and live life in a meaningful way. But when I look back at my public life for the last 40 years, it seems that I could not do as much as I wanted to. Anything that has been done with limited means can be considered as a fine example, but even that's not enough. Chinese philosopher Lao Tzu has said-- 'Knowing others is intelligence, knowing yourself is true wisdom'. So the journey of knowing self continues.

There's a verse in Ishavashyopanishad, which Gandhiji believed to be the basic foundation of Indian culture, it says - 'Kurvanneveh Karmani Jijivishchichatam Samah' i.e., one should imagine living 100 years by doing deeds. That is why the purpose of life has been to remain constantly endeavouring to conserve and enhance natural resources and bring women into the mainstream of society.

Our humble attempt to develop a small forest in the name of Gandhivan on one hundred hectares of barren land got international recognition, it gives some satisfaction. Recently, when invited by the Chief Minister of Rajasthan to the meeting of Gandhi 150, I suggested them to establish such Gandhivans in every district of the state; now let's see how much the government implements on this. If this happens, nature will definitely prosper in Rajasthan and the proliferation of desertification will stop, which is the world's biggest challenge today.

The small efforts made by the Gram Bharti Samiti to make women fearless, entitled and financially rich, give small glimpses indeed, but the masterwork of making them shine big is still to be done.

We have an ardent desire of a dream project for opening an environmental research center for the expansion of Gandhivan as an effective international form of nature conservation, opening training

centers to make our women self-reliant and setting up of a rural hospital. The strong support of Gandhi's inspiration is of course there, but if we get the necessary resources, it will be easy to materialize these dream projects. This project will be a humble tribute to Gandhi in this 20th century in the name of Mahamana Jamanalalji Bajaj. In the words of the great Greek philosopher Socrates, 'I know that I know nothing.'

JAMNALAL BAJAJ FOUNDATION

श्री भवानी शंकर कुसुम

पुरस्कार प्राप्तकर्ता

रचनात्मक कार्य के लिए पुरस्कार २०१९

मेरे जीवन का यह अप्रतिम अवसर है कि मुझे उस महान व्यक्ति के नाम पर स्थापित पुरस्कार के लिये चुना गया, जिन्होंने न केवल अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति और अपना व्यवसाय दांव पर लगाया, बल्कि पूरे परिवार को गांधी प्रणीत देश के स्वतंत्रता संग्राम के लिये समर्पित कर दिया। किसी देश की आजादी में उसकी प्रथम पंक्ति के नेतृत्व द्वारा दिये जाने वाले बलिदान का यह सम्भवतः विश्व का सबसे बड़ा और अद्‌भुत उदाहरण है। मैं स्व. जमनालाल जी बजाज तथा जानकी देवी जी को सादर नमन करता हूं।

मुझे जानकी देवी जी की '**मेरी जीवन यात्रा** में उल्लेखित उस घटना के संस्मरण से रोमांच होता है, जब 1956 में भारत की तत्कालीन सरकार ने उन्हें पद्‌म विभूषण से सम्मानित करने का निर्णय किया। जब उनके बड़े पुत्र श्री कमलनयन जी ने बताया कि इस आशय का पत्र तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने भेजा है, तो जानकी देवी जी ने अपना असमंजस प्रकट करते हुये कहा – 'राजेन्द्र बाबू तो अपने हैं, उनकी बात टालना कहीं अहंकार न हो जाय और स्वीकार करने की स्थिति में यह संकोच कि क्या मैं उसकी पात्र हूं?' अपने जीवन और अपने पूरे परिवार का पल पल देश को देने वाली उस महान महिला का यह मानसिक द्वन्द अद्‌भुत है।

आज मेरे मन में भी यह विचार आता है कि क्या मैं देश के ऐसे महान सपूत जमनालाल जी बजाज के नाम पर गठित पुरस्कार प्राप्त करने का पात्र हूं? मैं उनके त्याग, गरिमामय व्यक्तित्व और सतत कर्मशील जीवन के प्रति नत मस्तक हूं।

गांधी जी से मुझे सोचने की शक्ति, कर्म की प्रेरणा और सार्थक ढंग से जीवन जीने का मंत्र मिला। लेकिन जब पिछले 40 वर्षों के अपने सार्वजनिक जीवन की तरफ मुड़कर देखता हूं तो लगता है, उतना कुछ नहीं कर सका जितना करना चाहिये था। सीमित साधनों के साथ यत्किंचित जो कुछ कर पाया, वह एक सूक्ष्म उदाहरण तो माना जा सकता है, लेकिन यथेष्ट नहीं है। चीनी दार्शनिक लाओ त्जू ने कहा है– 'Knowing others is intelligence, Knowing yourself is true wisdom' सो अपने आप को जानने की यात्रा जारी है।

ईशावाष्योपनिषद, जिसे गांधी जी भारतीय संस्कृति का मूल आधार मानते थे, का एक श्लोक है– **'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः'** अर्थात मनुष्य को कर्म करते हुये 100 वर्ष जीने की कल्पना करनी चाहिये। इसलिये प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और संवर्द्धन तथा महिलाओं को समाज की मुख्य धारा में लाने के लिये सतत् प्रयत्नशील रहना ही जीवन का उद्देश्य बनाया है।

एक सौ हेक्टयर बंजड़ भूमि पर **गांधीवन** के नाम से छोटा सा जंगल विकसित करने के विनम्र प्रयास को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान मिली, यह कुछ सन्तोष देता है। पिछले दिनों राजस्थान के मुख्यमंत्री द्वारा गांधी 150 की बैठक में आमंत्रित किये जाने पर मैंने ऐसे **गांधीवन** प्रदेश के हर जिले में स्थापित करने का सुझाव दिया था, देखना है सरकार कितना मानती है। यदि ऐसा होता है, तो राजस्थान में प्रकृति निश्चित ही समृद्ध होगी तथा मरुस्थलीकरण का प्रसार रुकेगा, जो आज विश्व की विकराल चुनौती है।

महिलाओं को निर्भय, हिंसामुक्त और आर्थिक रूप से सम्पन्न बनाने के जो छोटे–छोटे प्रयत्न ग्राम भारती समिति द्वारा किये जा रहे हैं, वे प्रकाश की एक झलक तो देते हैं, पर उन्हें ज्योति बनाने का गुरुत्तर कार्य अभी शेष है।

गांधीवन को प्रकृति संरक्षण का प्रभावशाली अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप देने के लिये उसका विस्तार तथा पर्यावरण शोध केन्द्र, महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने के लिये प्रशिक्षण केन्द्र तथा एक ग्रामीण अस्पताल की स्थापना जैसे ड्रीम प्रोजेक्ट क्रियान्वित करने की उत्कष्ट अभिलाषा है। गांधी की प्रेरणा का सशक्त अवलम्बन तो है, यदि आवश्यकतानुसार संसाधन मिल जायं तो इन स्वप्निल परियोजनाओं को मूर्त रूप देना सहज हो जायेगा। बस ये परियोजना गांधी के चरणों में बीसवीं सदी के महामना जमना लाल जी बजाज के नाम पर विनम्र श्रद्धांजलि होगी। महान यूनानी दार्शनिक सुकरात के शब्दों में 'I Know that I know nothing.'